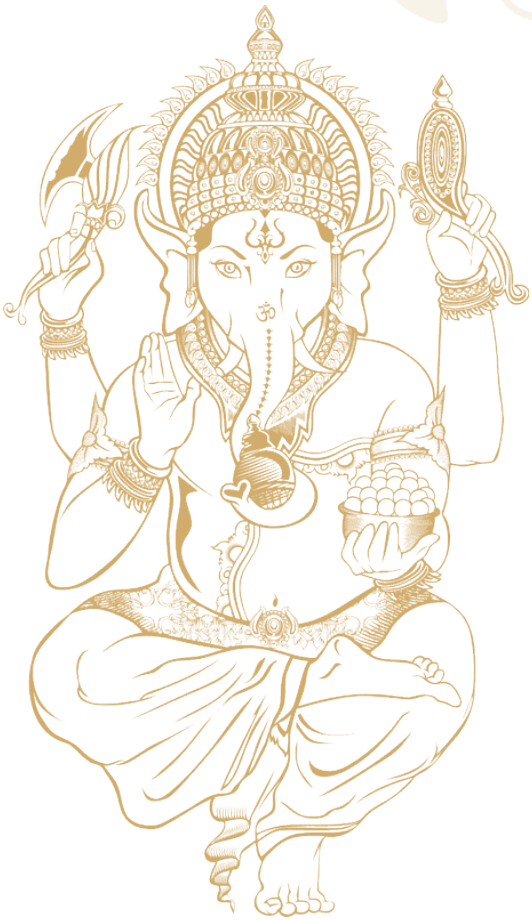

Parth more

03 Mar 2018

02:26 PM

Sonepat

Model: Web-MyKundli

Order No: 119702801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**03/03/2018**
दिन	शनिवार
जन्म समय	**14:26:00 घंटे**
इष्ट	19:10:48 घटी
स्थान	**Sonepat**
राज्य	Haryana
देश	India

अक्षांश	29:00:00 उत्तर
रेखांश	77:01:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:56 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	14:04:04 घंटे
वेलान्तर	-00:11:58 घंटे
साम्पातिक काल	00:48:26 घंटे
सूर्योदय	06:45:40 घंटे
सूर्यास्त	18:22:33 घंटे
दिनमान	11:36:53 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	18:36:57 कुम्भ
लग्न के अंश	28:47:01 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मिथुन - बुध
राशि-स्वामी	**कन्या - बुध**
नक्षत्र-चरण	**उ०फाल्गुनी - 3**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	शूल
करण	तैतिल
गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	आद्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	पा-पवन
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1939	फाल्गुन	12
पंजाबी	संवत : 2074	फाल्गुन	20
बंगाली	सन् : 1424	फाल्गुन	18
तमिल	संवत : 2074	मासी	19
केरल	कोल्लम : 1193	कुंभम	19
नेपाली	संवत : 2074	फाल्गुन	19
चैत्रादि	संवत : 2074	चैत्र	कृष्ण 2
कार्तिकादि	संवत : 2074	फाल्गुन	कृष्ण 2

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 2
तिथि समाप्ति काल _____: 26:18:25
जन्म तिथि _____: 2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: उ०फाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 20:54:43 घंटे
जन्म योग _____: उ०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग ____: शूल
योग समाप्ति काल _____: 22:42:32 घंटे
जन्म योग _____: शूल
सूर्योदय कालीन करण ____: तैतिल
करण समाप्ति काल _____: 15:07:49 घंटे
जन्म करण _____: तैतिल
भयात _____: 40:45:41
भभोग _____: 56:57:30
भोग्य दशा काल _____: सूर्य 1 वर्ष 8 मा 9 दि

घात चक्र

मास _____: भाद्रपद
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: श्रवण
योग _____: शुक्ल
करण _____: कौलव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: मेष
चन्द्र _____: मिथुन
मंगल _____: वृष
बुध _____: मीन
गुरु _____: मिथुन
शुक्र _____: कर्क
शनि _____: मीन
राहु _____: सिंह

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

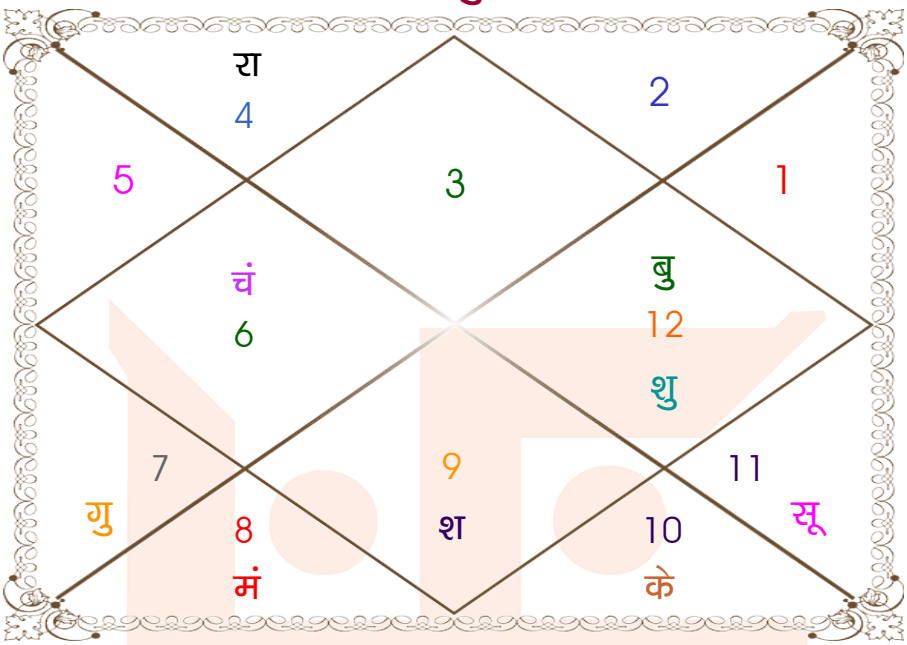

चन्द्र कुंडली

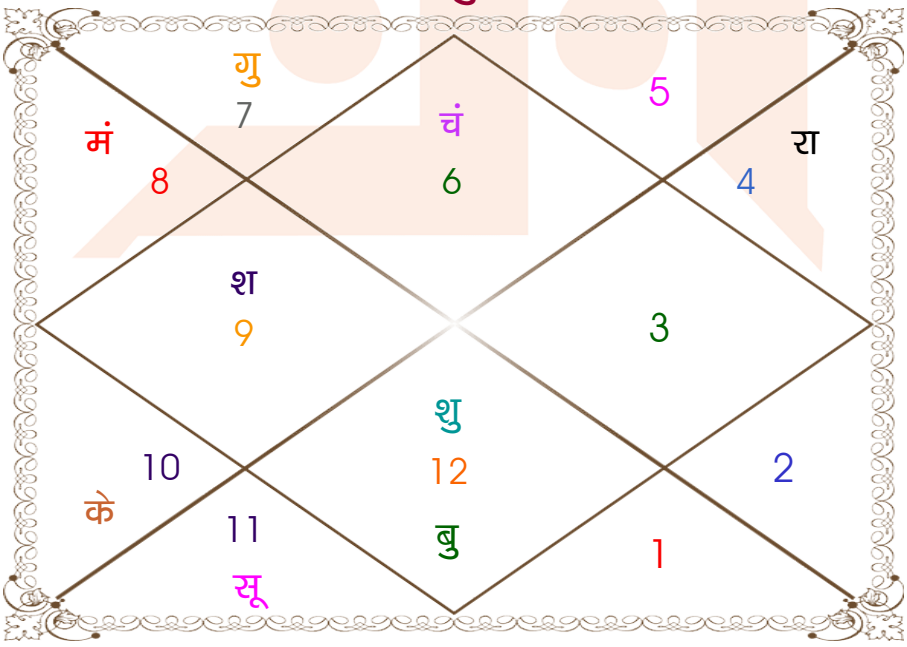

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

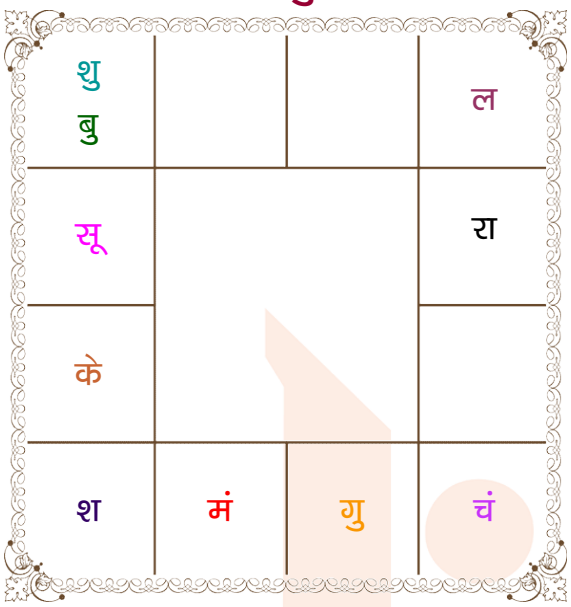

लग्न कुंडली

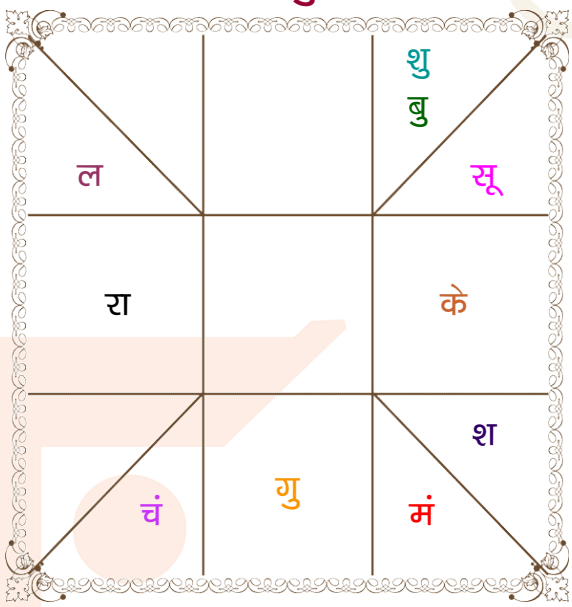

विंशोत्तरी
सूर्य 1वर्ष 8मा 9दि

सूर्य

03/03/2018

12/11/2133

सूर्य	11/11/2019
चन्द्र	11/11/2029
मंगल	10/11/2036
राहु	11/11/2054
गुरु	11/11/2070
शनि	11/11/2089
बुध	12/11/2106
केतु	12/11/2113
शुक्र	12/11/2133

योगिनी
सिद्धा 1वर्ष 11मा 21दि

संकटा

22/02/2020

22/02/2028

संकटा	03/12/2021
मंगला	22/02/2022
पिंगला	03/08/2022
धान्या	04/04/2023
भ्रामरी	22/02/2024
भद्रिका	03/04/2025
उल्का	03/08/2026
सिद्धा	22/02/2028

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	28:47:01	308:46:05	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	सूर्य	---
सूर्य			कुंभ	18:36:57	01:00:09	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	चंद्र	शत्रु राशि
चंद्र			कन्या	06:14:21	13:58:44	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	मित्र राशि
मंगल			वृश्चि	27:32:52	00:35:26	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	गुरु	स्वराशि
बुध			मीन	00:34:52	01:50:51	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	मंगल	नीच राशि
गुरु			तुला	29:03:43	00:01:06	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	सूर्य	शत्रु राशि
शुक्र			मीन	01:23:16	01:14:45	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	उच्च राशि
शनि			धनु	13:22:37	00:04:12	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	सम राशि
राहु	व		कर्क	20:38:41	00:04:03	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	शत्रु राशि
केतु	व		मक	20:38:41	00:04:03	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			मेष	01:55:00	00:02:42	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	---
नेप			कुंभ	19:46:46	00:02:17	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	मंगल	---
प्लूटो			धनु	26:34:07	00:01:24	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	केतु	---
दशम भाव			मीन	19:02:49	--	रेवती	--	27	गुरु	बुध	केतु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:06:27

लग्न-चलित

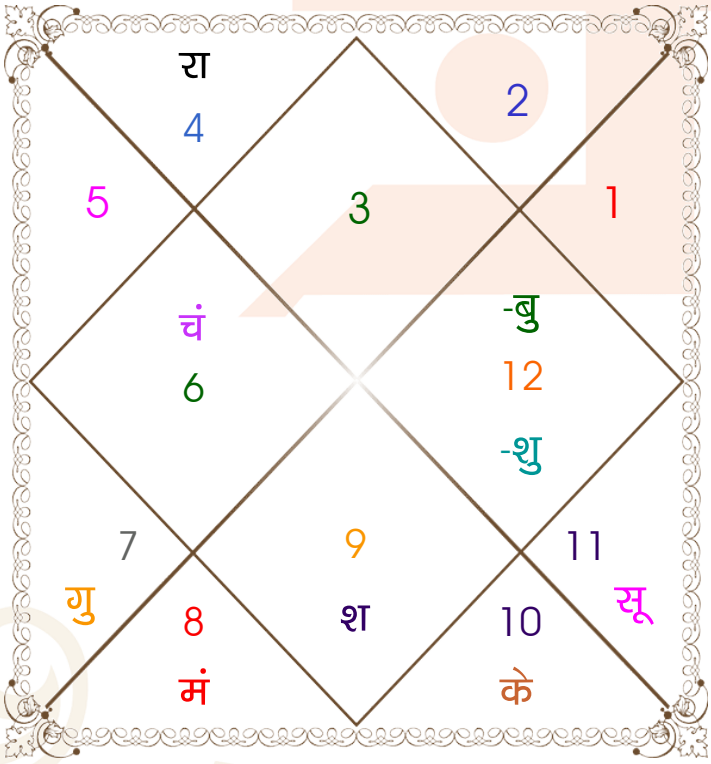

चन्द्र कुंडली

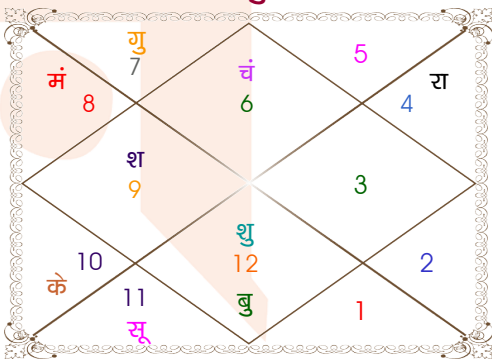

नवमांश कुंडली

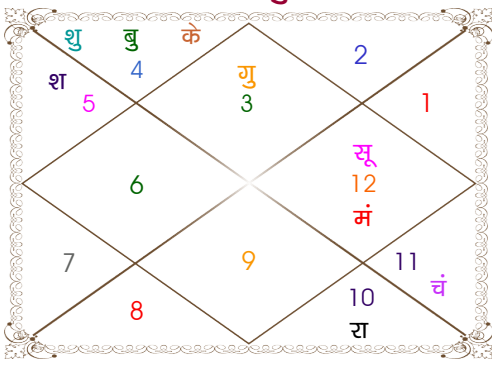

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मिथुन	12:09:39	मिथुन	28:47:01
2	कर्क	12:09:39	कर्क	25:32:17
3	सिंह	08:54:55	सिंह	22:17:33
4	कन्या	05:40:11	कन्या	19:02:49
5	तुला	05:40:11	तुला	22:17:33
6	वृश्चिक	08:54:55	वृश्चिक	25:32:17
7	धनु	12:09:39	धनु	28:47:01
8	मकर	12:09:39	मकर	25:32:17
9	कुम्भ	08:54:55	कुम्भ	22:17:33
10	मीन	05:40:11	मीन	19:02:49
11	मेष	05:40:11	मेष	22:17:33
12	वृष	08:54:55	वृष	25:32:17

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	28:47:01
2	कर्क	21:40:26
3	सिंह	17:54:25
4	कन्या	19:02:49
5	तुला	23:44:28
6	वृश्चिक	27:52:01
7	धनु	28:47:01
8	मकर	21:40:26
9	कुम्भ	17:54:25
10	मीन	19:02:49
11	मेष	23:44:28
12	वृष	27:52:01

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी

चलित कुंडली

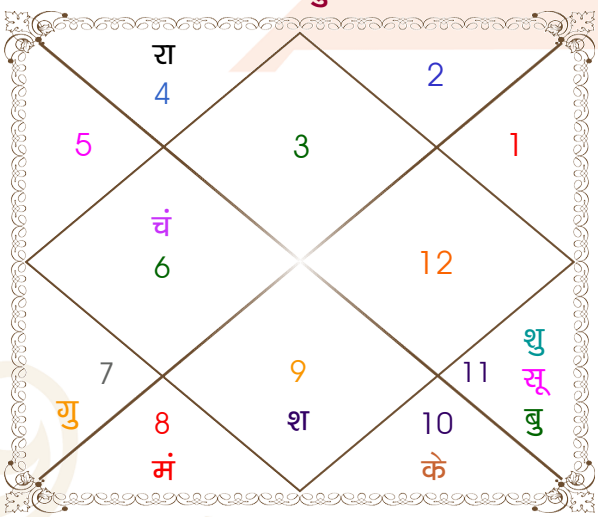

भाव कुंडली

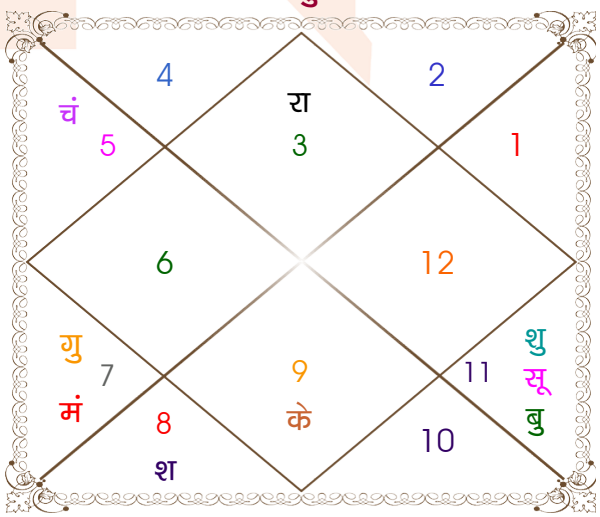

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 1 वर्ष 8 मास 9 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
03/03/2018		11/11/2019		11/11/2029		10/11/2036		11/11/2054	
11/11/2019		11/11/2029		10/11/2036		11/11/2054		11/11/2070	
	00/00/0000	चंद्र	11/09/2020	मंगल	09/04/2030	राहु	25/07/2039	गुरु	29/12/2056
	00/00/0000	मंगल	12/04/2021	राहु	27/04/2031	गुरु	17/12/2041	शनि	12/07/2059
	00/00/0000	राहु	12/10/2022	गुरु	02/04/2032	शनि	23/10/2044	बुध	17/10/2061
	00/00/0000	गुरु	11/02/2024	शनि	12/05/2033	बुध	13/05/2047	केतु	23/09/2062
	00/00/0000	शनि	11/09/2025	बुध	09/05/2034	केतु	30/05/2048	शुक्र	24/05/2065
	03/03/2018	बुध	10/02/2027	केतु	05/10/2034	शुक्र	31/05/2051	सूर्य	12/03/2066
बुध	06/07/2018	केतु	11/09/2027	शुक्र	06/12/2035	सूर्य	24/04/2052	चंद्र	12/07/2067
केतु	11/11/2018	शुक्र	12/05/2029	सूर्य	11/04/2036	चंद्र	23/10/2053	मंगल	17/06/2068
शुक्र	11/11/2019	सूर्य	11/11/2029	चंद्र	10/11/2036	मंगल	11/11/2054	राहु	11/11/2070

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
11/11/2070		11/11/2089		12/11/2106		12/11/2113		12/11/2133	
11/11/2089		12/11/2106		12/11/2113		12/11/2133		00/00/0000	
शनि	14/11/2073	बुध	08/04/2092	केतु	10/04/2107	शुक्र	13/03/2117	सूर्य	01/03/2134
बुध	24/07/2076	केतु	06/04/2093	शुक्र	09/06/2108	सूर्य	13/03/2118	चंद्र	31/08/2134
केतु	02/09/2077	शुक्र	04/02/2096	सूर्य	15/10/2108	चंद्र	12/11/2119	मंगल	06/01/2135
शुक्र	01/11/2080	सूर्य	11/12/2096	चंद्र	16/05/2109	मंगल	11/01/2121	राहु	01/12/2135
सूर्य	14/10/2081	चंद्र	12/05/2098	मंगल	12/10/2109	राहु	12/01/2124	गुरु	18/09/2136
चंद्र	16/05/2083	मंगल	10/05/2099	राहु	31/10/2110	गुरु	12/09/2126	शनि	31/08/2137
मंगल	23/06/2084	राहु	27/11/2101	गुरु	07/10/2111	शनि	12/11/2129	बुध	04/03/2138
राहु	30/04/2087	गुरु	04/03/2104	शनि	15/11/2112	बुध	12/09/2132		00/00/0000
गुरु	11/11/2089	शनि	12/11/2106	बुध	12/11/2113	केतु	12/11/2133		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 1 वर्ष 8 मा 14 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
11/09/2025		10/02/2027		11/09/2027		12/05/2029		11/11/2029	
10/02/2027		11/09/2027		12/05/2029		11/11/2029		09/04/2030	
बुध	23/11/2025	केतु	23/02/2027	शुक्र	22/12/2027	सूर्य	21/05/2029	मंगल	19/11/2029
केतु	23/12/2025	शुक्र	30/03/2027	सूर्य	21/01/2028	चंद्र	05/06/2029	राहु	12/12/2029
शुक्र	20/03/2026	सूर्य	10/04/2027	चंद्र	12/03/2028	मंगल	16/06/2029	गुरु	01/01/2030
सूर्य	14/04/2026	चंद्र	28/04/2027	मंगल	17/04/2028	राहु	14/07/2029	शनि	24/01/2030
चंद्र	28/05/2026	मंगल	10/05/2027	राहु	17/07/2028	गुरु	07/08/2029	बुध	14/02/2030
मंगल	27/06/2026	राहु	11/06/2027	गुरु	06/10/2028	शनि	05/09/2029	केतु	23/02/2030
राहु	12/09/2026	गुरु	09/07/2027	शनि	10/01/2029	बुध	01/10/2029	शुक्र	20/03/2030
गुरु	20/11/2026	शनि	12/08/2027	बुध	07/04/2029	केतु	11/10/2029	सूर्य	27/03/2030
शनि	10/02/2027	बुध	11/09/2027	केतु	12/05/2029	शुक्र	11/11/2029	चंद्र	09/04/2030

मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
09/04/2030		27/04/2031		02/04/2032		12/05/2033		09/05/2034	
27/04/2031		02/04/2032		12/05/2033		09/05/2034		05/10/2034	
राहु	05/06/2030	गुरु	12/06/2031	शनि	05/06/2032	बुध	02/07/2033	केतु	18/05/2034
गुरु	27/07/2030	शनि	05/08/2031	बुध	02/08/2032	केतु	24/07/2033	शुक्र	12/06/2034
शनि	25/09/2030	बुध	22/09/2031	केतु	25/08/2032	शुक्र	22/09/2033	सूर्य	19/06/2034
बुध	19/11/2030	केतु	12/10/2031	शुक्र	01/11/2032	सूर्य	10/10/2033	चंद्र	02/07/2034
केतु	11/12/2030	शुक्र	08/12/2031	सूर्य	21/11/2032	चंद्र	09/11/2033	मंगल	10/07/2034
शुक्र	13/02/2031	सूर्य	25/12/2031	चंद्र	25/12/2032	मंगल	30/11/2033	राहु	02/08/2034
सूर्य	04/03/2031	चंद्र	22/01/2032	मंगल	17/01/2033	राहु	24/01/2034	गुरु	22/08/2034
चंद्र	05/04/2031	मंगल	11/02/2032	राहु	19/03/2033	गुरु	13/03/2034	शनि	14/09/2034
मंगल	27/04/2031	राहु	02/04/2032	गुरु	12/05/2033	शनि	09/05/2034	बुध	05/10/2034

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
05/10/2034		06/12/2035		11/04/2036		10/11/2036		25/07/2039	
06/12/2035		11/04/2036		10/11/2036		25/07/2039		17/12/2041	
शुक्र	15/12/2034	सूर्य	12/12/2035	चंद्र	29/04/2036	राहु	07/04/2037	गुरु	19/11/2039
सूर्य	06/01/2035	चंद्र	23/12/2035	मंगल	12/05/2036	गुरु	17/08/2037	शनि	05/04/2040
चंद्र	10/02/2035	मंगल	30/12/2035	राहु	13/06/2036	शनि	20/01/2038	बुध	08/08/2040
मंगल	07/03/2035	राहु	18/01/2036	गुरु	11/07/2036	बुध	09/06/2038	केतु	28/09/2040
राहु	10/05/2035	गुरु	04/02/2036	शनि	14/08/2036	केतु	05/08/2038	शुक्र	21/02/2041
गुरु	06/07/2035	शनि	25/02/2036	बुध	13/09/2036	शुक्र	17/01/2039	सूर्य	06/04/2041
शनि	11/09/2035	बुध	14/03/2036	केतु	25/09/2036	सूर्य	07/03/2039	चंद्र	18/06/2041
बुध	11/11/2035	केतु	21/03/2036	शुक्र	31/10/2036	चंद्र	28/05/2039	मंगल	08/08/2041
केतु	06/12/2035	शुक्र	11/04/2036	सूर्य	10/11/2036	मंगल	25/07/2039	राहु	17/12/2041

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	8
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 8
शत्रु अंक	1, 4,
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, सुख
हीरा	शुक्र	78%	व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	73%	सुख, धन
पुखराज	गुरु	64%	सन्तति सुख, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	64%	धन, सुख
नीलम	शनि	62%	दम्पति, दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	59%	भाग्योदय, पराक्रम
लहसुनिया	केतु	16%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट
मूंगा	मंगल	0%	शत्रु व रोग, हानि

रत्न की शुभता

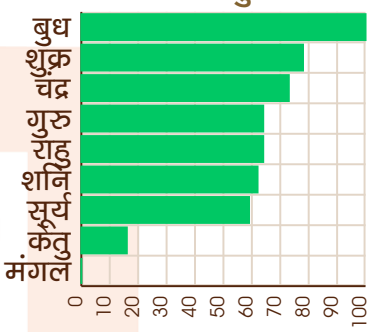

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	11/11/2019	72%	80%	9%	100%	70%	66%	50%	52%	0%
चंद्र	11/11/2029	66%	86%	0%	100%	64%	78%	62%	52%	0%
मंगल	10/11/2036	66%	80%	21%	88%	70%	78%	62%	52%	28%
राहु	11/11/2054	44%	61%	0%	100%	64%	84%	69%	77%	0%
गुरु	11/11/2070	66%	80%	9%	88%	77%	66%	62%	64%	16%
शनि	11/11/2089	44%	61%	0%	100%	64%	84%	75%	70%	0%
बुध	12/11/2106	66%	61%	0%	100%	64%	84%	62%	64%	16%
केतु	12/11/2113	44%	61%	9%	100%	64%	84%	50%	52%	41%
शुक्र	12/11/2133	44%	61%	0%	100%	64%	91%	69%	70%	28%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/03/2018-24/01/2020	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

द्वितीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

तृतीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढेसाती प्रथम ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/10/2097-02/05/2098	20/06/2098-26/12/2099	17/03/2100-16/09/2100
साढेसाती तृतीय ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	अल्प बचत
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	सुख
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सन्तति सुख

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। षष्ठ भाव शत्रु रोग, ऋण आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इस भाव में मंगल के प्रभाव से आप एक पराक्रमी पुरुष होंगे तथा शत्रु वर्ग को पराजित करने में समर्थ रहेंगे साथ ही शरीर में रोगाभाव रहेगा तथा सामान्यतया आप स्वस्थ ही रहेंगे। आप पराक्रमी एवं कठोर कार्यों को करने में रुचिशील रहेंगे। अतः आप पुलिस सेना या अन्य पराक्रमी विभागों में कार्यरत भी हो सकते हैं। जीवन में आपको ऋण अल्प मात्रा में ही लेना पड़ेगा तथा यदि लेना भी पड़ा तो आप इसे वापस देने में समर्थ रहेंगे जिससे मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनी रहेगी। साथ ही आप जीवन में इच्छित धन ऐश्वर्य एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। आपके प्रभावी व्यक्तित्व से अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे।

षष्ठ भाव से नवम भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आप धर्म या धार्मिक कार्यों पर अल्प मात्रा में ही रुचि रखेंगे साथ ही भाग्य की अपेक्षा आप कर्म पर अधिक विश्वास करेंगे। अतः आपके सांसारिक कार्यों की सिद्धि भाग्य बल की अपेक्षा परिश्रम पूर्वक कार्य करने से ही पूर्ण होगी। द्वादश भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक होगा। साथ ही यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु दाम्पत्य सुख का आप सामान्य रूप से उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। लग्न पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप समय समय पर गर्मी या रक्त विकार संबंधी परेशानी की अनुभूति करेंगे लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप अपने कार्यों को उत्साह पराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलताएं अर्जित करेंगे।

इस प्रकार षष्ठ भावस्थ मंगल की स्थिति आपके लिए सामान्यतया अच्छी रहेगी जिसके प्रभाव से आप धनऐश्वर्य से युक्त रहेंगे तथा अपने परिवार का आधुनिक परिवेश में

लालन पालन करने में समर्थ होंगे जिससे पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी तथा पारिवारिक जनों से आप पूर्ण सहयोग सुख एवं सम्मान प्राप्त होगा। अतः आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में सूर्य और शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो

आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दि सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

मंगल

छठेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, क्रोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नही रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र
(11/11/2019 - 11/11/2029)

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्ष की है। आपकी कुण्डली में यह 11/11/2019 को आरम्भ और 11/11/2029 को समाप्त होगी।

चन्द्र मानसिक शान्ति और सुख का कारक है इसलिए दस वर्षों की इस अवधि में आपको शांति, समृद्धि तथा मानसिक शांति की प्राप्ति होगी। इस अवधि में आप पूरी तरह सक्रिय रहेंगे, आपकी स्थिति सुदृढ़ होगी और धर्म-ईश्वर की ओर आपका झुकाव होगा।

स्वास्थ्य :

इस अवधि में आपको सुखी, शान्तिपूर्ण व उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। आप स्फूर्ति का अनुभव करेंगे और अपने कर्त्तव्यों और दैनिक गतिविधियों को पूरे उत्साह के साथ पूरा करेंगे।

किसी बड़े रोग अथवा किसी अप्रिय दुर्घटना की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

इस अवधि में आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। गाड़ी और जमीन-जायदाद के क्रय की सम्भावना है। आपके बैंक बैलेन्स में पर्याप्त वृद्धि होगी और आप सुख-सुविधा के साधनों पर व्यय करेंगे।

व्यवसाय :

नये विषयों और कार्यों की खोज में आपकी रुचि होगी। फलस्वरूप आपकी रचनात्मकता में वृद्धि होगी जिसकी आपके सहकर्मी तथा वरिष्ठ कर्मचारी सराहना करेंगे। आपके व्यवसाय में आपकी स्थिति मज़बूत होगी और सम्मान में वृद्धि तथा पद में उन्नति होगी। आपको यश और ख्याति प्राप्त होगी और आपका सर समाज में ऊँचा रहेगा। आपकी कुण्डली में यात्रा का संकेत है जो आपकी भलाई के लिए होगी। आपको यात्रा के अनेक अवसर मिलेंगे।

पारिवारिक जीवन :

चन्द्र चतुर्थ भाव का कारक है जो परिवार, सम्पत्ति, माता तथा वाहन का द्योतक है। इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा। सगे-संबंधियों तथा माता के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। मामा या नाना के साथ भी आपका संबंध मधुर रहेगा और उनसे लाभ मिलेगा।

इस दशा के दौरान आपके मामा को भी लाभ होगा तथा संभव है कि आपके और आपके मामा के बीच परस्पर मधुर संबंध के कारण आप दोनों को लाभ होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

नये विषयों के अध्ययन के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है। आप कोई पाठ्यक्रम आरम्भ कर सकते हैं अथवा अपने ज्ञान में सुधार के लिए अपनी शिक्षा जारी रख सकते हैं। आप अपने सभी कार्यों में सफल होंगे।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शनि
(11/02/2024 - 11/09/2025)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 11/11/2019 को प्रारंभ हुई और 11/11/2029 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 11/02/2024 को प्रारंभ होकर 11/09/2025 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। सप्तम में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 9, 1 और 4 भावों पर दृष्टि द्वारा अपना प्रभाव डाल रहा है।

इस अवधि में आपके जीवनसाथी आपके ऊपर हावी हो सकते हैं। आपका व्यवहार नीतिपूर्ण रहेगा। विदेश में सम्मान और आवास संभव हैं। उदर और कान के रोगों से सावधान रहें। शनि बहुत शक्तिशाली ग्रह है, यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। शुभफल में कुछ देरी हो सकती है, मगर मिलता अवश्य है।

अरिष्ट से बचाव के लिए सोने या चांदी में जड़ा नीलम शनिवार के दिन पूजा के बाद दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में अंगूठी को कच्चे दूध या गंगाजल से धोने के बाद शनि का वैदिक मंत्र पढ़ते हुए धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - बुध
(11/09/2025 - 10/02/2027)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 11/11/2019 को प्रारंभ हुई थी और 11/11/2029 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 11/09/2025 को प्रारंभ होकर 10/02/2027 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है। इस अंतर्दशा की अवधि में आप शिक्षा-दीक्षा में उत्तम प्रगति करेंगे। आपको प्रसिद्धि और प्रसन्नता प्राप्त होंगी। दान-धर्म में रुचि होगी। व्यापार में उन्नति होगी। अध्यात्म में दिलचस्पी बढ़ेगी। हर कार्य में सफलता मिलेगी। नेत्रों के रोगों से बचाव करें।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - केतु
(10/02/2027 - 11/09/2027)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 11/11/2019 को प्रारंभ हुई ओर 11/11/2029 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 10/02/2027 को प्रारंभ होकर 11/09/2027 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। अष्टम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है। केतु और राहु छायाग्रह हैं जिनकी कोई राशि नहीं होती। वास्तव में वे चंद्रमा के दो पात हैं। मनुष्य के जीवन पर इनका बहुत प्रभाव पड़ता है।

इस अवधि में आपकी इच्छाओं और वासनाओं की अति आपके दुख का कारण बनेगी। आप दूसरों के धन और स्त्री के पीछे भागने की कोशिश कर सकते हैं। उत्सर्जन तंत्र में कोई रोग हो सकता है। प्रत्येक कदम सावधानी से रखने की जरुरत है। अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के वैदिक मंत्र के 18,000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शुक्र
(11/09/2027 - 12/05/2029)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 11/11/2019 को प्रारंभ होकर 11/11/2029को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 11/09/2027 को प्रारंभ होकर 12/05/2029 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्धि, धन और समाज में सम्मान प्राप्त करेंगे। विपरीत लिंग के व्यक्तियों पर आपका प्रभाव रहेगा। स्त्रियों से संबंधित उत्पाद में लाभ होगा। व्यापार में आप प्रवीण होंगे। उपचार करने की शक्ति भी प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। धर्मगुरुओं और संतों का सम्मान करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - सूर्य
(12/05/2029 - 11/11/2029)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 11/11/2019 को प्रारंभ होगी और 11/11/2029 को समाप्त होगी।

महादशा :- मंगल
(11/11/2029 - 10/11/2036)

मंगल की महादशा 11/11/2029 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 10/11/2036 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल षष्ठम भाव में स्थित है। मंगल की दृष्टि बारहवे भाव, लग्न तथा नवम भाव पर है। इसके पहले आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। आपको समृद्धि की प्राप्ति हुई होगी, आपकी यात्रा हुई होगी और धन तथा धार्मिक कार्यों की ओर झुकाव रहा होगा। इस दशा के दौरान विरोधियों पर आपको विजय तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी और विदेशी स्रोतों से संभावित लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अपनी शक्ति को कायम रखने के लिए आपको प्रयास करना होगा। कभी-कभी कुछ मौसमी कारणों से आप ज्वर, संक्रामक बीमारी, उच्च रक्तचाप या पेट से सम्बन्धित बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं। सुरक्षात्मक उपायों से इन रोगों से मुक्ति हो सकती है; अन्यथा आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपका बैंक बैलेंस सुदृढ़ होगा। आपको विरोधियों या शत्रुओं से लाभ मिलेगा। केस-मुकदमें में विजय होगी और निर्णय आपके पक्ष में होगा। इस दशा में कार्य-क्षेत्र में स्थिति आपके अनुकूल होगी। जीविका के लिए इन्जीनियरिंग, प्रशासनिक सेवा, सैन्य सेवा, चिकित्सा क्षेत्र, रसायनज्ञ के कार्य अथवा सेवा कार्य का चयन कर सकते हैं।

परिवार :

परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपकी सन्तान से आपको लाभ होगा। उनसे आपको सुख की प्राप्ति होगी। आपके जीवनसाथी के साथ संबंध सन्तोषजनक रहेंगे।

आपकी माता को उनके सम्बन्धियों व छोटी यात्राओं से लाभ होगा। आपके पिता को यश, ख्याति, शक्ति और अधिकार की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों की जमीन-जायदाद में वृद्धि और जीवन-वृत्ति में उन्नति होगी जबकि बड़ों के लिए यह समय परिवर्तन का होगा जो अंततः लाभदायक होगा। मित्रों के चयन के प्रति सावधान रहें।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में आपको शत्रुओं पर विजय मिलेगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आगे आनेवाली राहु दशा में कुछ स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा में लाभ तथा संतान से सुख मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्राएं और समृद्धि की प्राप्ति होगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप परिवर्तन व लाभ की प्राप्ति होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा में कुछ मानसिक तनाव हो सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप साझेदारी में लाभ, विवाद और यात्राएं होंगी जबकि उसके बाद सूर्य की अन्तर्दशा के कारण जीवन में उन्नति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में समृद्धि की प्राप्ति, यात्रा ओर आध्यात्मिक कार्यों की ओर झुकाव होगा।

अंर्तदशा :- मंगल - मंगल
(11/11/2029 - 09/04/2030)

आपके लिए मंगल की महादशा 11/11/2029 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 11/11/2029 को प्रारंभ होकर 09/04/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप शत्रुओं और विरोधियों पर विजयी होंगे। मातहत आज्ञाकारी रहेंगे, मगर निगरानी आवश्यक है। किरायेदार सहयोग करेंगे; किराये से अच्छी आमदनी हो सकती है। रोगनिरोधक क्षमता और स्वास्थ्य उत्तम रहेंगे। आप स्वतंत्र, प्रतिस्पर्धा में कुशल और रौबदाब वाले होंगे। छोटी-मोटी चोटों से बचाव करें। यात्राए होंगी, अध्यात्म में रुचि हो सकती है। खर्चे बढ़ेंगे।

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी। आपके पिता को कार्यों में सफलता मिलेगी। माता को पड़ौसियों से लाभ होगा; छोटी यात्राएं हो सकती हैं। भाई-बहन जायदाद क्रय कर सकते हैं। बड़े भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है या अचानक धन मिल सकता है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी। अगर वे सेवारत हैं तो धन और प्रसिद्धि की प्राप्ति होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो समय सौभाग्यशाली रहेगा। व्यापारी सफल रहेंगे। परामर्शदाताओं का समय भी शुभ रहेगा।

पित्तरोगों, मामूली चोट, खून की खराबी आदि से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए लाल वस्तुएं, लाल चंदन और तांबे आदि का दान करें।